मन्सा सेवा - 52

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ खजानों को बढ़ाना आता है? **सफल करना अर्थात् लगाना।** तो सदा कार्य में लगाते हो या जब चांस मिलता है तब लगाते हो? **हर समय चेक करो - चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से सफल जरूर करना है।** सारे दिन में कितनों की सेवा करते हो?

➳ _ ➳ अगर सेवाधारी सेवा नहीं करे तो अच्छा नहीं लगेगा ना। तो **विश्व-सेवाधारी हो! हर दिन सेवा करनी ही है। सदा याद रखो कि जो भी अखुट खजाने मिले हैं वो देने ही है। दाता के बच्चे हो, तो रोज़ देना जरूर है जो महादानी होते हैं वो एक दिन भी देने के बिना नहीं रह सकते।**

➳ _ ➳ **अगर वाचा का चांस नहीं मिलता तो मन्सा करो, मन्सा का नहीं मिलता तो अपने कर्म वा प्रैक्टिकल लाइफ द्वारा सेवा करो।** कई कहते हैं कि आज कोई स्टूडेन्ट मिला ही नहीं, कोई सुनने वाला नहीं मिला। **लेकिन मन्सा-सेवा तो बेहद की सेवा है।** मन्सा-सेवा करनी आती है?

➳ _ ➳ **जितना आप मन्सा से, वाणी से स्वयं सैम्पल बनेंगे, तो सैम्पल को देखकर के स्वत: ही आकर्षित होंगे। तो आप सभी फस्ट-क्लास सैम्पल हो ना।** फर्स्ट-क्लास सैम्पल फर्स्ट-क्लास को लायेगा ना! **सिर्फ दृढ़ संकल्प रखो तो सहज हो जायेगा। अगर कोई भी व्यर्थ संकल्प अपने अन्दर ही होगा कि पता नहीं सफलता मिलेगी वा नहीं मिलेगी-तो यह संकल्प सफलता को भी पीछे कर देता है।**

➳ _ ➳ **इसलिए जब समय परिवर्तन का है तो परिवर्तन होना ही है, हुआ ही पड़ा है। हिम्मत का कदम उठाओ तो मदद है ही है। हिम्मत वाले हो ना। खुशी से बोलो - हाँ जी!** पाण्डव थोड़े गम्भीर हैं। सोच रहे हैं।

➳ _ ➳ **समर्थ आत्मा हूँ - यह बार-बार याद रखना। तो कमाल करके दिखायेंगे।** अच्छा! **अभी जितने आये हो उससे 10गुणा बढ़ाकर आना!** मुश्किल है? **तो क्यों नहीं कहते हो कि 10गुणा नहीं, 100गुणा बढ़ाकर के आयेंगे। कितनी दुआयें मिलेंगी! सेवा की दुआयें बहुत सहज उड़ाने वाली हैं। उड़ने वाले हो ना। दूसरे वर्ष रिजल्ट देखेंगे।**

(18/02/1993)

➢ मैं समर्थ आत्मा हु

➳_ ➳ सारा खेल ही स्मृति और विस्मृति का है

→ **मैं समर्थ आत्मा हु**

■ इसे भूलना ही नही है

- **बार बार, दिन रात स्वयं को याद दिलाते रहना है**
- माला जपते रहना है
- **अजपाजाप करते रहना है**
- तो स्मृति का सूर्य उदय रहेगा
- **विस्मृति होते ही कमजोरिया आती है**
- गलतिया होती है

➢ दुआ

➳_ ➳ **हमारे पुरुषार्थ में हमे दुआओ की सूक्ष्म मदद हमे मिलती है**

→ जिन्होंने कई आत्माओ को **सुख** दिया है

→ किसी की स्थूल **मदद** की

- **वो स्वतः ही दुआओ के पात्र बन जाते है**
  - दुआये सूक्ष्म और अद्रश्य है
  - दिखाई नहीं देती है

➳_ ➳ कोई अगर बहुत पुरुषार्थ कर रहा है

→ फिर भी उन्हें सफलता नही मिलती है

- **तो दुआओ की जरुर कमी होगी**
  - **इसीलिए सफलता नहीं मिलती है**

➳_ ➳ असंख्य, बहुत सारी आत्माओ की दुआये जिसके साथ चलती है

→ **उसके पुरुषार्थ में स्वत तेजी आ जाती है**

- वह आत्मा **पुरुषार्थ में गैलप** करने लगती है
  - और उसकी **स्थिति स्वतः ही उपर उठने** लग जाती है
  - छोटी छोटी बाते उसे **विचलित नही** करती
  - **बातो रूपी बादल को वो सहज ही क्रॉस कर लेंगे**

→ वो बल आता है सूक्ष्म दुआओ से

- इसलिए जब भी अवसर मिलता है
  - तो आत्माओ की सेवा कर दुआओ के पात्र बनो

➳_ ➳ **हर आत्मा के प्रति शुभ भावना शुभ कामना रखनी है की सभी आत्माये सुखी और शांत हो जाय**

➢➢ सफलता

➳_ ➳ **सेवा में सफलता के लिये द्रढ़ता चाहिए**

→ ऐसा नही सोचना है की,

- **सफलता मिलेगी या नहीं**
  - स्वयं को तैयार रखना है

- द्रढ़ संकल्प करना है की,
- **सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है**